IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विभिन्न परिवेश की स्नातक स्तरीय छात्राओं में शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता – एक अध्ययन ।

डा0 सरिता कनौजिया,

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग,

नवयुग कन्या महाविद्यालय,
लखनऊ , यू पी ।

शोध सार :

आज सम्पूर्ण विश्व में स्त्री की समाज में प्रतिष्ठा और दशा उन्नत करने, उसकी शिक्षा के प्रचार और प्रसार द्वारा उसकी सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाने और राष्ट्र के निर्माण और विकास कार्यों में पूर्ण रूप से उसकी सहभागिता प्राप्त करने हेतु विभिन्न प्रयास किये जा रहे है। परंतु महिलाओं की आर्थिक विकास की गतिविधियों में सहभागिता का घटता स्तर, शक्ति सन्तुलन एवं निर्णायात्मक भूमिका में अपर्याप्त पहचान तथा उनके मानवाधिकार का हनन आदि ऐसे पक्ष हैं जो स्पष्ट करते हैं कि स्त्रियों को सशक्त करने के लिये चलाये जा रहे विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की गति आज भी अत्यन्त धीमी है। वर्तमान स्थिति में बालिका सशक्तीकरण के लिये किये गये विविध शैक्षिक प्रयासों से घर तथा बाहर जगत में बालिकायें कितनी जागरूक एव सशक्त हुई हैं; यह एक विचारणीय विषय बन गया है। कौन से प्रयास किस प्रकार से बालिकाओं के शैक्षिक सशक्तीकरण को गति प्रदान कर सकें इस सम्बन्ध में समाजशास्त्रीय दृष्टि से वैज्ञानिक शोध अपेक्षित हैं।

मूल शब्द : महिलाओं, सहभागिता, निर्णायात्मक भूमिका, शैक्षिक, सशक्तीकरण, जागरूक ।

प्रस्तावना :

हम जिस समाज में रहते हैं उस समाज का ढाँचा व्यक्तियों के सम्बन्धों पर निर्भर करता है। इन विभिन्न सम्बन्धों का दायित्व स्त्री–पुरुष दोनों के कन्धों पर समान रूप से होता है। यह दोनों ही समाज रूपी ढाँचे को आधार प्रदान करते हैं, परन्तु इस प्राकृतिक व्यवस्था को समाज की रूढ़िगत परम्पराओं ने समय के साथ–साथ असन्तुलित कर दिया है। समाज की पितृसत्तात्मक संरचना ने पुरुषों को श्रेष्ठ तथा स्त्रियों को हीन स्थिति प्रदान कर सम्पूर्ण समाज की आदर्श स्थिति को विघटित कर दिया है। वर्तमान समय में इस विघटन की स्थिति से समाज को बाहर लाने के लिये वैश्विक स्तर पर विभिन्न प्रचार साधनों, गोष्ठियों, सम्मेलनों आदि की सहायता से बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिये युद्ध स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे स्त्री समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका की अनुभूति करा सकती है। सामान्य तौर पर शिक्षा आर्थिक आत्मनिर्भरता में सहायक होती है, इससे स्त्रियों का सामाजिक स्तर ऊपर उठता है तथा उनका सशक्तीकरण होता है। यह सभी जानते हैं

कि मनुष्य वस्तुनिष्ठ नहीं बल्कि व्यक्तिनिष्ठ होता है; उस पर उसके परिवेश का व्यापक प्रभाव पड़ता है। इसी दृष्टि से वर्तमान शोध ''विभिन्न परिवेश की स्नातक स्तरीय छात्राओं में शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता – एक अध्ययन'' विषय का चयन किया गया ।

समस्या–कथन :

''विभिन्न परिवेश की स्नातक स्तरीय छात्राओं में शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता – एक अध्ययन''।

मुख्य पदों की परिभाषा –

- स्नातक स्तरीय छात्राएँ :–

स्नातक स्तरीय छात्राओं से तात्पर्य बी. ए., बी.एस.सी, बी.काम. में' अध्ययनरत छात्राओं से है।

- शैक्षिक सशक्तीकरण :–

शैक्षिक सशक्तीकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाना जिससे वे अपने शिक्षा अधिकारों के प्रति सजग होकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक तथा अन्य क्षेत्रों में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर सके।

- शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता :–

किसी विषय अथवा क्षेत्र के प्रति अधिकाधिक चैतन्यता एवं सजगता व्यक्ति की उस क्षेत्र में जागरूकता को इंगित करती है, इसी प्रकार छात्राओं की अपने शिक्षा अधिकारों के प्रति अधिक से अधिक चैतन्यता व सजगता उनकी ' शैक्षिक सशक्तीकरण' के प्रति जागरूकता को इंगित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं :–

- शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता को ज्ञात करने हेतु उपकरण का निर्माण करना।
- शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की विभिन्न शैक्षिक वर्ग की स्नातक छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता को ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :–

शोधकर्त्ता द्वारा अपने शोध अध्ययन को दिशा प्रदान करने के लिए शून्य परिकल्पना का चयन किया गया।

- शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक स्तर की कला वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

- शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक स्तर की विज्ञान वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

- शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक स्तर की वाणिज्य वर्ग छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध अभिकल्प :–

प्रस्तुत अध्ययन में कार्य–कारण में सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु शोधार्थी द्वारा अप्रयोगात्मक अनुसंधान के घटनोत्तर अनुसंधान के सहसम्बन्ध अभिकल्प का चयन किया गया है।

न्यादर्श चयन विधि एवं न्यादर्श आकारः–

शोधकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में असम्भाव्य न्यादर्श विधि की सोद्देशीय विधि को अपनाते हुये न्यादर्श के रूप में लखनऊ नगर के शहरी तथा ग्रामीण परिवेश से 75:75 अर्थात् कुल 150 स्नातक छात्राओं को शामिल करने का निश्चय किया गया।

सारणी सं0–1

परिवेश	संकाय		
	कला वर्ग	विज्ञान वर्ग	वाणिज्य वर्ग
शहरी	25	25	25
ग्रामीण	25	25	25

वर्तमान शोध के उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में चूंकि शोध की प्रकृति वर्तमान सामाजिक समस्या से सम्बन्धित है अतः शोधकर्त्ता को अपनी समस्या से सम्बन्धित कोई भी उपकरण उपलब्ध नहीं हो पाया इसी कारण उसने स्वयं से अपने अध्ययन में विभिन्न चरों के मापन हेतु निम्न उपकरण का निर्माण किया –

- शैक्षिक सशक्तीकरण जागरूकता मापनी।

अध्ययन क्षेत्र का सीमांकन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमांकन अग्रलिखित है :–

- शोध केवल लखनऊ नगर की स्नातक छात्राओं तक ही सीमित है।
- शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की क्रमशः 75–75 अर्थात् कुल 150 स्नातक छात्राओं को ही न्यादर्श के रूप में लिया गया है।
- शोध में शैक्षिक वर्ग के रूप में केवल कला वर्ग, विज्ञान वर्ग, वाणिज्य वर्ग को हीं लिया गया है।

परिणाम तथा परिणामों की व्याख्या :–

सारणी 02

शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक स्तर की कला वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता का अन्तर

क्रमांक	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी' ('t')	सार्थकता
1.	शहरी	25	22.92	1.213	3.2	0.492	6.412	p < .01
2.	ग्रामीण	25	19.72	3.316				

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की कला वर्ग की स्नातक छात्राओं का शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 22.92 एवं 19.72 है तथा उनका मानक–विचलन क्रमशः 1.213 एवं 3.316 है। इन मध्यमानों के मध्य अन्तर का परीक्षण 'टी' (t') मूल्य के आधार पर करने से यह मूल्य 6.412 प्राप्त हुआ है, जिसकी सार्थकता की सम्भाव्यता का स्तर .01 से भी कम है, इस प्रकार परिकल्पना संख्या 1 अस्वीकृत हो जाती है तथा यह सिद्ध होता है कि शहरी परिवेश की कला वर्ग की स्नातक छात्राओं की जागरूकता का स्तर उच्च है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी परिवेश की कला वर्ग की स्नातक छात्राये शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति अधिक जागरूक हैं।

सारणी 03

शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक स्तर की विज्ञान वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता का अन्तर

क्रमांक	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी' ('t')	सार्थकता
1.	शहरी	25	22.12	2.103	1.72	0.506	3.39	p < .01
2.	ग्रामीण	25	20.4	2.898				

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की विज्ञान वर्ग की स्नातक छात्राओं का शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 22.12 एवं 20.4 है तथा उनका मानक–विचलन क्रमशः 2.103 एवं 2.898 है। इन मध्यमानों के मध्य अन्तर का परीक्षण 'टी' (t') मूल्य के आधार पर करने से यह मूल्य 3.39 प्राप्त हुआ है, जिसकी सार्थकता की सम्भाव्यता का स्तर .01 से भी कम है, इस प्रकार परिकल्पना संख्या 2 अस्वीकृत हो जाती है तथा यह सिद्ध होता है कि शहरी परिवेश की विज्ञान वर्ग की स्नातक छात्राओं की जागरूकता का स्तर उच्च है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी परिवेश की विज्ञान वर्ग की स्नातक छात्राये शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति अधिक जागरूक हैं।

सारणी 04

शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक स्तर की वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता का अन्तर

क्रमांक	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी' ('t')	सार्थकता
1.	शहरी	25	23.88	2.909	2.02	0.637	3.171	p < .01
2.	ग्रामीण	25	21.86	3.446				

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण परिवेश की स्नातक छात्राओं का शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 23.88 एवं 21.86 है तथा उनका मानक–विचलन क्रमशः 2.909 एवं 3.446 है। इन मध्यमानों के मध्य अन्तर का परीक्षण 'टी' (t') मूल्य के आधार पर करने से यह मूल्य 3.171 प्राप्त हुआ है, जिसकी सार्थकता की सम्भाव्यता का स्तर .01 से भी कम है, इस प्रकार परिकल्पना संख्या 03 अस्वीकृत हो जाती है तथा यह सिद्ध होता है कि शहरी परिवेश की वाणिज्य वर्ग की स्नातक छात्राओं की जागरूकता का स्तर उच्च है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी परिवेश की वाणिज्य वर्ग की स्नातक छात्राये शैक्षिक सशक्तीकरण के प्रति अधिक जागरूक हैं।

प्राप्त निकर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्राओं के शैक्षिक सशक्तीकरण को सक्रिय बनाने में व्यक्ति के परिवेश की मुख्य भूमिका होती है। शहरी परिवेश में संभवतः उच्च संचार साधनों तथा सामाजिक गतिशीलता के कारण छात्राओं के सशक्तीकरण की प्रक्रिया में ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में तीव्रता अधिक

होती है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में संभवतः निम्न शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता की न्यूनता तथा संचार साधनों की कमी के कारणों से वे शहरी छात्राओं की तुलना में कम जागरूकता तथा सशक्तता को प्राप्त कर पाती हैं।

References :

Acharya M. and Bennett, J. (1981): An Aggregate Analysis and Summary of Eight Village Studies, Status of Women in Nepal, Vol. 4, Part 9 CEDA Kathmandu.

Ahlawat, Neerja (2002): Empowering women – challenges before women's organization. Guru Nanak Journal of Sociology, Vol. 23 (Oct.), 79-85.

Ahuja Ram (1993): Indian Social System, Rawat Publication, Delhi.

Best, John, W. & Kahn, James V. (2003): Research in Education, New Delhi: Prentice Hall of India.

Cameron, P. (1985): Married women in jobs. Sociological Abstract, Vol. 33(5), 208.

CARE (2011): Women Empowerment retrieved from http//www.care org/new room. Publications/white papers/women-30K.

CWDS (1990): Perspective on Rural Women and Development, Cenrtre for Women's Development Studies, New Delhi, 110016.

Famida, Handy & Kassam Meenaz (2004): Women's empowerment in rural India. Paper presented at the ISTR Conference, Faculty of Environmental Studies, York University, Toronto, Ontario, Canada.

Fernandes, Walter (1991): Urbanization, coping mechanisms and slum women's status. Social Action, Vol. 41, pp. 382-398.

Government of India (2008): Kurukshetra. A Journal on Rural Development, Vol. 56 (3), Ministry of Rural Development.

Lather, Anu Singh and others (2009): Women empowerment in urban India: A Study of working women professionals in India. Delhi Business Review, Vol. 10(2), 12-15.

Lennie, June (2002): Rural women's empowerment in a communication technology project. Rural Society, Vol. 12(3), 224-245.